पाठ - 27

FCG131

बाबू बंधू सिंह

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम सन् 1857 ई0 में देष के जिन सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति देकर उस महासंग्राम को अमर बनाया, उनमें अमर षहीद बंधू सिंह का नाम प्रमुख हैं। बंधू सिंह पूर्वांचल के एक ऐसे नायक थे, जिन्होंने गोरखपुर जिले में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे।

अंग्रेज उनके नाम से दहल उठते थे।

अमर षहीद बाबू बंधू सिंह का जन्म गोरखपुर जिले के ग्राम-डुमरी कोर्ट (तत्कालीन डुमरी रियासत), थाना- चैरीचैरा में 1 मई, सन् 1833 ई0 को जागीरदार बाबू षिव प्रसाद सिंह के यहाँ हुआ था। बंधू सिंह के अतिरिक्त षिव प्रसाद सिंह के पाँच और पुत्र दलहम्मन सिंह, तेजई सिंह, फतेह सिंह, झीनक सिंह और करिया सिंह थे। षिव प्रसाद सिंह 'डुमरी रियासत' के जागीरदार थे। डुमरी रियासत कभी 'सतासी' राज्य का भाग हुआ करता था। राजपरिवार से होने के कारण सभी भाइयों सहित बंधू सिंह का लालन-पालन अच्छी प्रकार से हुआ था। सभी भाई बहादुर एवं बलवान थे।

उस समय पूरा भारतीय समाज अंग्रेजों के अत्याचार व दमन से त्रस्त था। बचपन से ही बंधू सिंह के मन में अंग्रेजी दासता को समाप्त करने की इच्छा प्रज्वलित हो उठी थी। कहा जाता है कि वे नित्य देवी पूजन को जाया करते थे। एक दिन पूजा के समय उन्होंने आषीर्वाद माँगा कि "हे माँ! मुझे ऐसी षक्ति प्रदान करो जिससे मैं अपने देषवासियों को अंग्रेजी दासता की बेड़ियों से मुक्ति दिला सकूँ।" इसके बाद उन्होंने अंग्रेजों को चुन-चुन कर समाप्त करने का फैसला किया।

कुछ समय पष्चात सन् 1857 ई0 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की लौ पूरे देष में जल उठी और उस संघर्ष की लौ में उन्होंने चुन-चुन कर अंग्रेजों का सफाया आरंभ कर दिया। उनके इस कार्य से अंग्रेजी षासन में भय व्याप्त हो गया था।

बाबू बंधू सिंह ने पूर्वी उत्तर प्रदेष (तत्कालीन यूनाइटेड प्रॉविन्स) के गोरखपुर जिले में क्रांति की लौ को प्रज्वलित कर जन-जन में फैला दिया। उन्होंने अपने भाइयों के साथ यहाँ की जनता में आजादी का जोष पैदा किया। वे गोरिल्ला युद्ध के माध्यम से अंग्रेज अफसरों और सैनिकों का काम तमाम करते थे।

एक बार की घटना के संबंध में कहा जाता है कि अंग्रेजों को अपना खजाना गोरखपुर भेजना था लेकिन बंधू सिंह के कारण कोई इसका साहस नहीं जुटा पा रहा था। तब अंग्रेजों के वफादार एक अफसर ने कहा कि हम खजाना लेकर जाएँगे और बंधू सिंह व उसके भाइयों को मार-मार कर खाल उतार लंेगे। उस अफसर की चुनौती को बंधू सिंह व उनके भाइयों ने स्वीकार करते हुए रास्ते में उस पर हमला बोल दिया तथा उसे मारकर खजाना अपने अधिकार में कर लिया और उस धन को स्वाधीनता के संघर्श में लगा दिया।
सैयद अहमद अली षाह, मियाँ साहब इमामबाड़ा गोरखपुर की पुस्तक 'कषफुल बगावत' में बंध्ाू सिंह का उल्लेख है। कविता में अहमद अली षाह ने सन् 1857 ई0 की क्रांित का विस्तृत वर्णन करते हुए अपनी संपत्ति को भी नुकसान पहुँचाने का विवरण दिया है।

अंग्रेजी षासन के विरुद्ध बंधू सिंह व उनके साथियों का संघर्श और तेज होता देखकर अंग्रेज उन्हें पकड़ने के लिए बेचैन हो उठे। उनके खिलाफ सम्मन जारी हो गया तथा उन्हें पकड़ने के लिए अंग्रेज सैनिकों की गतिविधियाँ बढ़ गईं। ऐसे समय में बंधू सिंह ने अपने पूजा स्थल के निकट के जंगल में षरण लेकर देवी की विषेश आराधना षुरू कर दी। अंग्रेज उन्हें पकड़ने में असफल हो रहे थे। तब अंग्रेज अफसरों ने ृाड्यंत्र के माध्यम से उन्हें गिरफ्तार करने की गुप्त योजना बनाई। उन्होंने मुखबिर का सहारा लिया। मुखबिर ने धोखे से बाबू बंधू सिंह को अंग्रेजों के हाथों गिरफ्तार करवा दिया। अंग्रेजी षासन ने मुकदमे की कार्यवाही चलाए बिना ही बंधू सिंह को बागी ठहरा कर 12 अगस्त, सन् 1857 ई0 को गोरखपुर षहर के अलीनगर चैराहे के पष्चिम में खुली जगह पर सरेआम फाँसी पर लटका दिया।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार बंधू सिंह को अंग्रेजों ने गिरफ्तार करके वर्तमान डोमखाना मोती जेल अर्थात तत्कालीन प्रथम जेल गोरखपुर में बंदी बनाकर रखा था। उस समय घंटाघर के स्थान पर वहाँ पतजू (पुत्रजीवा) का पेड़ हुआ करता था, उस पर ही उन्हें फाँसी दी गई। उसी स्थान पर बाद में घंटाघर का निर्माण हुआ। डॉ0 सलाम संदीलवी ने अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-अदबियत गोरखपुर' में बंधू सिंह के अन्य साथियों का भी वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि मोषर्रफ अली, फैजबख्ष, फजल अली एवं अली हसन को भी घंटाघर के चैक स्थित तत्कालीन पतजू के पेड़ पर लटकाकर खुलेआम फाँसियाँ दी गईं।

जनश्रुति है कि जिस समय बाबू बंधू सिंह को फाँसी दी जा रही थी, उस समय उनके गले से फाँसी का फंदा सात बार टूट गया। सभी अंग्रेज अफसर हैरान व परेषान थे। आठवीं बार बंधू सिंह ने देवी माँ से प्रार्थना की कि अब मुझे अपने चरणों में आने दो। इतना कहने के बाद उन्होंने स्वयं फाँसी का फंदा अपने गले में डाल लिया और भारत माँ की खातिर हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

जनश्रुतियों के अनुसार बंधू सिंह की गर्दन फाँसी के फंदे से लटकते ही उनके पूजा स्थान पर स्थित तरकुल (ताड़) के पेड़ का ऊपरी हिस्सा कट कर गिर गया और उससे रक्त जैसा स्राव निकलने लगा। कालांतर में यही स्थान 'तरकुलही देवी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहाँ प्रतिवर्श चैत्र नवरात्र के मेले में लाखों लोग दर्षन करने एवं श्रद्धा सुमन चढ़ाने आते हैं।

बाबू बंधू सिंह की वीरगाथाएँ वहाँ के लोग गीतों, लोक नाटकों एवं बिरहा आदि के माध्यम से गाते चले आ रहे हैं, जो जनमानस को सदैव उनके बलिदान की याद दिलाते रहंेगे।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. बाबू बंधू सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
2. अंग्रेजी शासन में बाबू बंधू सिंह के किस कार्य से भय व्याप्त हो गया था?
3. अफसर की चुनौती का सामना बंधू सिंह ने कैसे किया?
4. बाबू बंधू सिंह के फाँसी के फंदे के संबंध में कौन सी जनश्रुति प्रसिद्ध है?